15 अध्याय

केंद्रीय चिकित्सा संस्थान और नए एम्स

15.1 एम्स, नई दिल्ली

प्रस्तावना

1956 में स्थापित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली की स्थापना संसद के एक अधिनियम द्व ारा की गई जो एक राष्ट्रीय महत्ता का संस्थान तथा उत्कृ ष्टता केन्द्र है। विगत 6 दशकों में एम्स ने रोगी परिचर्या प्रदाता, अनुसंधान संस्थान तथा शिक्षण संस्थान के रूप में अपनी भूमिका अति सराहनीय तरीके से निभाई है। इस संस्थान ने अपनी योग्यता और शिक्षण के उच्च मानक को सर्वथा बनाए रखा है।

15.1.1 चिकित्सा शिक्षा

एम्स को एम्स अधिनियम, 1956 के तहत मेडिकल, डेंटल और नर्सिंग डिग्री, डिप्लोमा और नर्सिंग डिग्री, डिप्लोमा और अन्य शैक्षणिक उपाधि प्रदान करने का अधिकार दिया गया है। एम्स विभिन्न स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है। विभिन्न विषयों के स्नातक पाठ्यक्रमों में एमबीबीएस, बी.एससी. (ऑनर्स.) मेडिकल टेक्नोलॉजी इन रेडियोग्राफी और ओफ्थैल्मिक तकनीक, बी.एससी. नर्सिंग (पोस्ट–सर्टिफिकेट) और बी. एससी. (ऑनर्स) नर्सिंग शामिल है। पोस्ट ग्रेजुएट पाठ्यक्रमों

में पीएचडी, डीएम, एमसीएच, एमडी, एमएस, एमडीएस, एमएचए, एम बायोटेक्नोलॉजी (एम. बायोटेक) और विभिन्न विषयों में एम.एससी शामिल हैं।

माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा एम्स में कौशल, ई–लर्निंग एवं टेलीमेडीसीन (एसईटी) सुविधा का उद्घाटन

एम्स, नई दिल्ली में एसईटी

15.1.2 रोगी की देखभाल

वर्ष 2018–19 में लगभग 23.58 लाख लोग ओपीडी में आए और 1,84,466 सर्जरी की गई और 1,39,638 लोगों को एम्स में मेन हॉस्पिटल, कार्डियोथोरेसिक एंड न्यूरोसाइंसेस सेंटर (सीएनसी) और सेंटर फॉर डेंटल एजुकेशन एंड रिसर्च (सीडीईआर) में प्रवेश मिला। विवरण तालिका 'क' में दिया गया है।

तालिका क

क्रं. सं.		2018-19		
		मुख्य अस्पताल	सीएनसी	सीडीईआर
1	अस्पताल के बिस्तर			
	सामान्य	997	400	15
	निजी	165	64	-
	कुल	1,162	464	15
2	ओपीडी अटेंडेंस आपातकालीन सहित	16,56,329	3,39,172	3,59,918
3	रोगी	1,17,169	21,278	1,191
4	शल्य प्रक्रियाएं	97,900	84,509	2,057

15.1.3 चिकित्सा अनुसंधान

अनुसंधान एम्स के संकाय और वैज्ञानिकों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है और इसके लिए अनुसंधान अनुभाग आईसीएमआर, डीबीटी, आईसीएमआर और अन्य जैसी विभिन्न एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित बाह्य अनुसंधान परियोजनाओं को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करके एक महत्वपूर्ण सुविधा प्रदाता की भूमिका निभाता है। चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में संस्थान की विभिन्न उपलब्धियाँ / गतिविधियाँ निम्नानुसार हैं:

(i) एम्स में असिस्टेंट प्रोफेसर और एसोसिएट प्रोफेसर के लिए इंट्रामुरल रिसर्च ग्रांट

क. सह–जांचकर्ताओं के साथ एकल प्रधान अन्वेषक

ख. फंडिंगः रु .5 लाख / वर्ष – दो साल तक बढ़ाई जा सकती है

ग. आंतरिक परियोजना समीक्षा समिति द्वारा निगरानी

(ii) इंट्राम्यूरल इंटर–डिसिप्लिनरी कोलाबेरेटिव रिसर्च प्रोजेक्ट्स – एम्स में फैकल्टी के सभी

एम्स में निःशुल्क शटल सेवा की शुरूआत करते हुए माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री

स्तरों के लिए

क. पूरक विशेषज्ञता के साथ दो अलग–अलग विभागों / विषयों के दो प्रधान जांचकर्ता

ख. धनराशि – दो वर्ष के लिए 5 लाख रु. / वर्ष प्रति पीआई (कुल 20 लाख रु.)

ग. बाह्य परियोजना समीक्षा समिति द्वारा निगरानी

(iii) अंतर–संस्थागत सहयोगी अनुसंधान परियोजनाएं

क. आईआईटी–दिल्ली

ख. आईआईटी – खड़गपुर

ग. टीएचएसटीआई

घ. पूरक विशेषज्ञता के साथ दो अलग–अलग संस्थानों के दो प्रधान जांचकर्ता

ड़. अनुदान (दोनों संस्थानों से अंतरंग) – 5 लाख रु ./ वर्ष प्रति पीआई दो वर्ष (कुल 20 लाख रु.)

(iv) केंद्रीय कोर अनुसंधान सुविधा

क. बीएसएल2 / 3 के उन्नत क्षेत्रों में समकालीन प्रौद्योगिकियों और प्रयोगशालाओं का एकीकृत केंद्र, जीनोमिक्स, प्रोटिओमिक्स, बायोएनालिटिक्स, जैव सूचना विज्ञान, माइक्रोस्कोपिक इमेजिंग, फ्लो साइटोमेट्री और सामान्य सुविधा

ख. संस्थान के सभी विभागों के सभी संकायों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए सुलभ

ग. कन्वर्जेंस ब्लॉक की 9 वीं मंजिल पर स्थापना की प्रक्रिया में।

(v) नैदानिक अनुसंधान ईकाई

क. विकास में सहायता प्रदान करने की योजना बनाई जा रही है, आवेदन, और अन्वेषक के कार्यान्वयन ने सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुपालन में अनुसंधान शुरू किया।

ख. नैदानिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए संसाधन और सेवाएं प्रदान करना और नैदानिक अनुसंधान के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को सूचित करना।

ग. आईआईटी–दिल्ली, आईआईटी–खड़गपुर, टीएचएसटीआई और आईजीआईबी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

15.1.4 उपलब्धियां

क) एम्स–II के झज्जर परिसर में **राष्ट्रीय कैंसर संस्थान** – चरण–I के रूप में सितंबर, 2018 में 710 बिस्तर क्षमता वाले केन्द्र की योजना बनाई गई थी जिसे 250 बिस्तरों तथा आपातकालीन सेवाओं के साथ शुरू किया गया जिसमें 15 ओटी तथा

शासी निकाय द्वारा अनुमोदित लगभग 1105.52 करोड़ रु. की लागत से सितंबर, 2019 तक कार्य के पूरा होने की उम्मीद है।

250 बिस्तरों के साथ फरवरी, 2019 से चरण ८ को परिचालित किया गया है।

35 आईसीयू बिस्तरों सहित बेसिक निदान और प्रयोगशाला तथा बेसिक विकिरण उपचार सेवा का उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 19.02.2019 को किया गया। आवासीय परिसर में लगभग में लगभग 600 छात्रावास कमरे तथा विभिन्न श्रेणी के 400 आवासीय फ्लैट प्रस्तावित हैं।

ख) **एम्स नई दिल्ली के मास्टर प्लान का कार्यान्वयनः–** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली को विश्वस्तरीय चिकित्सा विश्वविद्यालय में परिवर्तित करने के लिए मास्टर के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

ग) **ई–शोध समाचार पत्र** शुरू किया गया है और त्रैमासिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

घ) **प्रथम वार्षिक एम्स अनुसंधान दिवसः** प्रथम वार्षिक एम्स अनुसंधान दिवस 26 मार्च 2019 को मनाया गया। प्रो. एम.के भान मुख्य अतिथि थे और एम्स डायमंड जुबली व्याख्यान दिया। छात्रों और निवासियों की सभी श्रेणियों में कुल 426 पुरस्कार प्राप्त हुए। संकाय सदस्यों की स्क्रीनिंग समितियों द्वारा उनकी समीक्षा की गई और शीर्ष 3 पुरस्कार को मौखिक प्रस्तुतियों के लिए चुना गया। सभी श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए। "बिल्डिंग मेडिकल रिसर्च ट्रेजेक्टरी इन इंडिया" पर एक पैनल चर्चा भी हुई, जिसमें पैनलिस्ट प्रो. वी.के. पॉल, सदस्य, नीति आयोग, प्रो. रणदीप गुलेरिया, निदेशक, एम्स, प्रो. आशुतोष शर्मा, सचिव, डीएसटी, डॉ.रेणु स्वरूप, सचिव, डीबीटी और प्रो. बलराम भार्गव, महानिदेशक, आईसीएमआर और सचिव, डीएचआर, मॉडरेटर जिपमेर के निदेशक प्रो राकेश अग्रवाल थे।

15.1.6 बजट

वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान सरकार द्वारा सहायता अनुदान के तहत कुल 3229.00 करोड़ रु. की बजटीय सहयोग दिया गया। व्यय के शीर्षों प्रमुखों में बुनियादी ढांचे, मशीनरी और उपकरण, वेतन भुगतान और उपभोग्य वस्तुएं शामिल हैं।

15.2 स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (पीजीआईएमईआर), चंडीगढ़

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ को "राष्ट्रीय महत्व" के एक संस्थान के रूप में घोषित किया गया और 1 अप्रैल, 1967 को संसद के एक अधिनियम (1966 का अधिनियम 51) द्वारा एक स्वायत्त निकाय बना। यह केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित है।

15.2.1 अस्पताल सेवाएं

पीजीआईएमईआर में रोगी देखभाल सेवाओं का विस्तार नेहरू अस्पताल से लेकर कई स्वतंत्र केंद्रों जैसे न्यू ओपीडी ब्लॉक, एडवांस पीडियाट्रिक सेंटर, न्यू इमरजेंसी ब्लॉक, एडवांस्ड आई सेंटर, ड्रग डी–एडिक्शन सेंटर, एडवांस्ड कार्डिएक सेंटर और एडवांस्ड ट्रॉमा सेंटर अस्पताल के बेड और ऑपरेशन थिएटर तक है।

पीजीआईएमईआर की कुल बेड संख्या 1948 बेड तक बढ़ गई है। रोगियों की संख्या जो बाह्य रोगियों के विभागों में आए और जो पिछले चार वर्षों के दौरान इलाज के लिए भर्ती हुए, निम्नानुसार हैं:

रोगी उपस्थिति	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16
आउटडोर	28,76,257	27,25,183	25,55,455	24,23,501
इनडोर एडमिशन	98,710	96,626	89,584	87,973

पिछले चार वर्षों में की गई छोटी और बड़ी सर्जरी की संख्या इस प्रकार है:

सर्जरी	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16
छोटी	2,05,542	1,86,282	1,69,243	1,62,021
बड़ी	50,889	47,430	44,918	43,373

आपातकालीन और गंभीर रोगियों को चौबीसों घंटे सेवाएं प्रदान की गयी।

15.2.2 आपातकालीन सेवाएं

इमरजेंसी कॉम्प्लेक्स और आधुनिक ट्रॉमा सेंटर एक ही छत के नीचे जांच और संचालन सहित सभी चिकित्सा और सर्जिकल आपातकालीन सेवाएं प्रदान करता है। आपातकालीन सेवाओं की देखरेख असिस्टेंट प्रोफेसर, अस्पताल प्रशासन विभाग और वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारियों (कैजुअल्टी) द्वारा की जाती है। वे मेडिको–लीगल मामलों से निपटने के लिए जिम्मेदार हैं, रोगियों को योग्य सेवाएं प्रदान करते हैं और जीवन रक्षक दवाओं और उपभोज्य वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं। एमएचए निवासी दिन–प्रतिदिन के प्रशासनिक कामकाज में सहायता करते हैं। आपात स्थिति का प्रबंधन मेडिकल / सर्जिकल और सुपर स्पेशियलिटी सलाहकार और वरिष्ठ निवासियों द्वारा किया जाता है। उपकरणों और जीवन रक्षक दवाओं वाले अलमारी वाले एक आपदा क्षेत्र को चिह्नित किया गया है और इसका उपयोग बड़े पैमाने पर घायलों के इलाज के लिए किया जाता है। वीआईपी को इमरजेंसी में लाए जाने की स्थिति में किसी भी आपातकालीन स्थिति को पूरा करने के लिए एक सुसज्जित वीआईपी कमरा बना हुआ है। नीचे दिए गए आँकड़े पीजीआईएमईआर में आपातकालीन सेवाओं पर कार्यभार का अवलोकन प्रस्तुत करते हैं।

	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16
ओपीडी	1,20,703	1,16,764	99,201	89,550
भर्ती	48,099	47,901	44,388	42,376
बड़ी सर्जरी	19,406	18,377	16,862	15,557
छोटी सर्जरी	3,325	3,426	3232	2,887

15.2.3 अनुसंधान

संस्थान ने रोगी देखभाल, चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान तीनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। वर्षों से रोगी देखभाल भार तेजी से बढ़ रहा है और अब अप्रबंधनीय हो रहा है। वर्ष 1963–64 में 1,25,163 मरीजों की वार्षिक उपस्थिति और 3,328 प्रवेशों से, वर्ष 2018–19 में यह आंकड़ा 28,76,257 मरीजों और 98,710 प्रवेशों तक पहुंच गया है। संस्थान देश और विदेश के बड़ी संख्या में मेडिकल कॉलेजों की चिकित्सा शिक्षा की अगुवाई कर रहा है।

पीजीआई संकाय को पिछले साल अतिरिक्त–भित्ति अनुदान के रूप में 33 करोड़ रु. प्राप्त हुए और लगभग 1339 शोध पत्र प्रकाशित हुए। लगभग 181 वैज्ञानिकों को फैलोशिप और अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। संस्थान के विभिन्न विभागों ने डीएसटी, डब्लूएचओ, आईसीएमआर और अन्य एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित 212 अनुसंधान परियोजनाओं को पूरा किया और राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और पीजीआई अनुसंधान निधियों द्वारा समर्थित 676 अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर हैं। पीजीआईएमईआर की रोगी–देखभाल, शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों का विस्तार जारी है।

15.2.4 शैक्षणिक गतिविधियाँ

पीजीआईएमईआर को पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ अधिनियम, 1966 के तहत चिकित्सा, दंत चिकित्सा और नर्सिंग डिग्री, डिप्लोमा और अन्य शैक्षणिक उपाधि प्रदान करने का अधिकार दिया गया है, वर्ष के दौरान 01.04.2018 से 31.03.2019 तक, संस्थान ने कई पीएचडी उपाधि प्रदान की हैं। , 37 एम.सीएच. डिग्रियां, 70 डीएम डिग्रियां, 64 एमएस डिग्रियां, 166 एमडी डिग्रियां, 09 एमडीएस डिग्री, 07 मास्टर इन हॉस्पिटल प्रशा. डिग्री, 01 फैलोशिप पीजीआई (रिप्रोडक्टिव एंडोक्रिनोलॉजी एंड इनफर्टिलिटी), 16 मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ डिग्री, 02 मास्टर ऑफ ऑडियोलॉजी एंड स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी, 18 एम.एससी। (रेडियोडायगनोसिस / रेडियोथेरेपी) / एम.एससी., चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, 25 एम.एससी. (नर्सिंग), 47 बी.एससी (मेडिकल टेक्नोलॉजी) डिग्री, 09 बी.एच.टी. डिग्री, 04 बैचलर ऑफ ऑडियोलॉजी एंड स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी (बीएएसएलपी) डिग्री, 118 बी.एससी. (नर्सिंग) की डिग्रिया प्रदान की हैं। इसके अलावा, सत्र जुलाई और सितंबर, 2018 के दौरान लगभग 310 उम्मीदवारों ने उम्मीदवारों के 310 लगभग विभिन्न पोस्टग्रेजुएट / पोस्टडॉक्टोरल पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया है।

इस अवधि के दौरान निम्नलिखित फैलोशिप शुरू किए गए थेः

1) रीनल प्रत्यारोपण सर्जरी विभाग में फेलोशिप रीनल और अग्नाशय प्रत्यारोपण।

2) प्रसूति विभाग तथा स्त्री रोग विभाग में फैलोशिप उच्च जोखिम गर्भावस्था और पेरिओनैटोलॉजी।

जुलाई 2018 में संस्थान में 8 नए डीएम / एम.सी. एच सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम आरम्भ किए गए।

15.2.5 इंजीनियरिंग विभाग

- माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने 07.03.2019 को हिमाचल प्रदेश के ऊना में पीजीआईएमईआर सैटेलाइट केंद्र की स्थापना के लिए आधारशिला रखी है। चारदीवारी के निर्माण के लिए निविदा मंगाई गई है।
- 250 बिस्तर वाले अस्पताल (नेहरू अस्पताल का विस्तार) का निर्माण कार्य प्रगति पर है। अप्रैल, 2019 तक कार्य पूरा होने की उम्मीद है।
- अनुसंधान ब्लॉक 'ए' तथा 'बी' हेतु वितरण प्रणाली तथा 11 केवी इलेक्ट्रीकल सबस्टेशन के उन्नयन कार्य को पूरा किया गया है तथा श्री जे.पी. नड्डा, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा दिनांक 09.02.2019 को इसका शुभारम्भ किया गया।
- एचएससीसी को न्यूरोसाइंस सेंटर की स्थापना के लिए निष्पादन एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। एचएससीजी द्वारा प्रस्तुत कॉन्सेप्ट योजनाओं को संस्थान द्वारा अनुमोदित किया जा चुका है। एचएससीसी ने बिल्डिंग प्लांस, अग्नि सुरक्षा लेआउट, पर्यावरण मंजूरी आदि की मंजूरी के लिए स्थानीय अधिकारियों को आवेदन दिया है।
- मैसर्स एचएलएल इंफ्रा टेक सर्विसेज लि. (हाइट्स) को मातृ एवं बाल केन्द्र की स्थापना के लिए कार्य निष्पादन एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। हाइट्स द्वारा प्रस्तावित अवधारणा चित्र संस्थान द्वारा अनुमोदित किए गए हैं। हाइट्स द्वारा प्रस्तुत डीपीआर में कुछ कमियां हैं और उन्हें जल्द से जल्द संशोधित डीपीआर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है।
- संघ शासित क्षेत्र प्रशासन, चंडीगढ़ से पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ को सारंगपुर में 50.76 एकड़ भूमि के हस्तांतरण का प्रस्ताव, अस्पताल सेवाओं के विस्तार के लिए 80.71 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत पर 19.02.2019 को आयोजित बैठक में मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया है।

15.2.6 वर्ष 2018–19 में उपलब्धियाँ

- **राष्ट्रीय पुरस्कार:** पीजीआईएमईआर को नेशनल इंस्टीट्यूशन्स रैंकिंग फ्रेमवर्क में राष्ट्रीय स्तर पर नंबर 2 मेडिकल श्रेणी में रखा गया था। माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचे की घोषणा की। रैंकिंग 2018–19 के लिए भारत के मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई थी। देश में 800 से अधिक चिकित्सा संस्थानों का मूल्यांकन पांच कारकों शिक्षण, शिक्षण और संसाधन; अनुसंधान और पेशेवर अभ्यास; स्नातक परिणाम; आउटरीच और समावेशिता और सार्वजनिक धारणा के आधार पर किया गया था।

- ड्रग डी–एडिक्शन एंड ट्रीटमेंट सेंटर (डीडीटीसी), मनोचिकित्सा विभाग, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ ने शराब और मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए "उत्कृष्टता का संगठन" के रूप में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया, "सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान और नवाचार" श्रेणी के तहत सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रूप में यह पुरस्कार सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रदान किया गया था, और यह भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद द्वारा प्रदान किया गया था।

- **आधुनितम सुविधाएं और उपचार:** पीजीआईएमईआर स्वतंत्र रूप से लाइव डॉनर लीवर प्रत्यारोपण (एलडीएलटी) द्वारा उत्तर भारत का पहला केन्द्रीय सरकार का संस्थान बना है। वर्तमान में पीजीआई देश का सबसे बड़ा संस्थागत मृतक दाता लीवर प्रत्यारोपण (डीडीएलटी) केन्द्र है।

- पीजीआईएमईआर में नवजात रोबोटिक सर्जरी पहली बार की गई थी। बाल चिकित्सा विभाग में बाल रोग सर्जनों की टीम ने रोबोट सर्जरी के साथ दो दिन के नवजात शिशु का सफलतापूर्वक इलाज किया है। एशिया में ऐसा पहली बार हुआ है कि इतना छोटा बच्चा रोबोट की सुविधा से संचालित किया गया है। बाल चिकित्सा विभाग 1980 के दशक की शुरुआत से इन बच्चों का ऑपरेशन कर रहा है और भारत में नवजात सर्जिकल स्थितियों के लिए सबसे बड़ा रेफरल केंद्र है।

- पीजीआईएमईआर ने एडवांस कार्डियक सेंटर (इंस्टीट्यूट ऑफ एसीसी) में स्थित न्यूक्लियर मेडिसिन डिपार्टमेंट की पहले से मौजूद न्यूक्लियर कार्डियोलॉजी सुविधा के लिए एक नए **स्पैक्ट गामा कैमरा (डी–स्पैक्ट)** को चालू करके अपनी उपलब्धियों में और वृद्धि की है।

- पीजीआईएमईआर में नए कैंसर उपचार, क्रायोब्लेशन शुरू किया गया। पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में रेडियोडायग्नोसिस विभाग ने उन मरीजों में ट्यूमर का क्रायोबैलेशन करने के लिए अत्याधुनिक मशीन का अधिग्रहण किया है, जो सर्जरी से इलाज करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। यह मशीन देश में कहीं भी स्थापित की गई अपनी तरह की पहली मशीन है। विभाग अब पूरी तरह से अनियंत्रित कैंसर के इलाज के लिए तैयार है, जिसमें रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन, माइक्रोवेव एबलेशन, अपरिवर्तनीय इलेक्ट्रोपोरेशन, उच्च तीव्रता केंद्रित अल्ट्रासाउंड और अब क्रायोब्लेशन जैसे सभी अपवर्जन तौर–तरीके हैं, जो एक ही छत के नीचे उपलब्ध हैं।

- **एक ओपन एमआरआई मशीन,** जो क्लस्ट्रोफोबिया का कारक नहीं है, हाल ही में पीजीआई में स्थापित किया गया था। पीजीआई में स्थापित नई मशीन में एक खुला बोर डिजाइन है, और क्लस्ट्रोफोबिया का कारक नहीं है। इस मशीन का एक और बड़ा फायदा यह है कि यह खड़े होने की स्थिति में रोगियों की छवि बना सकती है और रीढ़, या घुटनों, टखनों आदि जैसे विभिन्न जोड़ों पर बेहतर असर दिखा सकती है।

- प्रोफेसर जगत राम ने न्यू ओपीडी परिसर में एक **सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी क्लिनिक** का उद्घाटन किया था।

- एम नए आधुनिक **नेफ्रोलॉजी एंड ट्रांसप्लांट केयर यूनिट (एनटीसीयू)** का उद्घाटन किया गया था, यह एक 6 बिस्तरों वाला गहन देखभाल सुविधा केन्द्र है जो कि गुर्दे की बीमारी या किडनी प्रत्यारोपण प्राप्त करने वाले गंभीर रूप से बीमार रोगियों की जरूरत को पूरा करेगी।

- **रेडियोथिरेपी विभाग में एडवांस्ड हाई एनर्जी लीनियर एक्सलेटर** 25 करोड़ रु. की लागत से स्थापित किया गया था। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ, हमारा नवीनतम अधिग्रहण हमें पूर्व एमएल मशीनों की तुलना में 160 एमएलसी पत्तियों के साथ क्षेत्रों को सटीक आकार देने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, अन्य उन्नत विकिरण तकनीकें जैसे कि इमेज गाइडेड रेडिएशन थेरेपी (आईजीआरटी), इंटेंसिटी मॉड्यूलेटेड आर्क थेरेपी (आईएमएटी) एफएफएफ तकनीक का प्रयोग करते हुए 2400 एमयू / मिनट की बढ़ी हुई खुराक दरों के कारण कम उपचार समय में उच्च परिशुद्धता के साथ प्रदर्शन किया जा सकता है।
- श्री जे पी नड्डा, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री और हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने 7 मार्च, 2019 को **पीजीआई सैटेलाइट सेंटर, ऊना** का शिलान्यास किया। केंद्र में 300 बिस्तर होंगे जिसमें सामान्य वार्ड, निजी वार्ड, ओटी कॉम्प्लेक्स, आईसीयू, एचडीयू/ वेधशाला शामिल है। इसकी लागत 495.30 करोड़ रु. होगी।
- मंत्रिमंडल ने पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में 250–बिस्तरों वाले गेरिएट्रिक केयर एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर की स्थापना को मंजूरी दी है। इसकी लागत 469 करोड़ रु. होगी।

हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन

- कैंसर देखभाल सेवाओं के साथ–साथ पीजीआईएमईआर में कैंसर के क्षेत्र में प्रशिक्षण और अनुसंधान में सुधार के लिए पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ और अमेरिकन सोसायटी ऑफ क्लिनिकल ऑन्कोलॉजी (एएससीओ) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ ने थैलेसीमिया प्रत्यारोपण के लिए 2 करोड़ रुपये प्रदान करने के लिए कोल इंडिया लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

नए पद

- इस साल संकाय की क्षमताओं में वृद्धि हेतु 176 पदों का सृजन किया गया। ओटी तकनीशियनों के लिए 43 पद स्वीकृत किए गए हैं।

रोगी अनुकूल पहल

- संस्थान ने गरीब रोगी कल्याण कोष के लिए संस्थान की वेबसाइट–pgimer.edu.in पर ऑनलाइन दान की सुविधा शुरू की। 31 मार्च तक 53 लाख रु. ऑनलाइन दान दिए जा चुके हैं और 1.50 करोड़ रुपये ऑफ़लाइन दान दिया गया है।
- **आयुष्मान भारत/ प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना** को पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में 13 .10. 2018 से सफलतापूर्वक लागू किया गया है। लगभग 1100 आवेदनों को संसाधित किया गया है।
- **उन्नत ट्रॉमा सेंटर में अमृत** (उपचार हेतु सस्ती दवाएं और विश्वसनीय प्रत्यारोपण) फार्मेसी का उद्घाटन किया गया है। यह पीजीआई के मरीजों के लाभ के लिए ऐसा छठा आउटलेट है।
- न्यूरो–विकासात्मक विकारों से पीड़ित बच्चों और किशोरों के लिए मनोचिकित्सा विभाग में **बाल और किशोर मनोरोग** का एक नया वार्ड खोला गया।
- **मरीजों के लाभ के लिए एडवांस कार्डियक सेंटर में चार और लिफ्ट लगाई गईं।** इन लिफ्टों के चलने पर कुल 9 लिफ्टें मरीजों और परिचारकों के लिए उपलब्ध होंगी।

पीजीआईएमईआर में अंग दान

- **पीजीआईएमईआर में कैडेवर डोनेशन:** 2018–19 में 33 कैडवर डोनेशन के साथ, पीजीआईएमईआर को अब तक 185 कैडेवर ऑर्गन डोनेशन प्राप्त हुआ, जिससे अब तक 436 एंड स्टेज ऑर्गन फेलियर मरीजों को जीवन का दूसरा मौका मिला। पिछले वित्तीय वर्ष 2018–19 में 66 किडनी, 13 लीवर, 1 हार्ट, 7 अग्न्याशय और 806 कॉर्निया एकत्रित किए गए।

15.2.7 सूचना प्रौद्योगिकी पहल

अस्पताल के कम्प्यूटरीकरण पहल के तहत पीजीआई परिसर में लगभग 4000 इंफो आउटलेट बिंदुओं (आई

/ओ) का एक स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (एलएएन) स्थापित किया गया है। इस लैन के बाद अस्पताल सूचना प्रणाली सॉफ्टवेयर (एचआईएस) का उपयोग संस्थान के सभी विभाग / अनुभागों द्वारा किया जा रहा है। एचआईएस संस्थान के सभी नैदानिक, गैर–नैदानिक और सहायक सेवाओं को कवर करता है और इसे मेन डेटा सेंटर, नेहरू अस्पताल में स्थापित सर्वरों के माध्यम से प्रबंधित किया जा रहा है।

मरीजों की देखभाल पीजीआई वेब–पोर्टल http://pgimer.edu.in पर उपलब्ध ऑनलाइन सेवाओं द्वारा की गई है, जैसे किसी भी ओपीडी या विशेष क्लिनिक, ऑनलाइन लैब जांच रिपोर्ट देखने, पीजीआईएमईआर के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग में रक्त की ऑनलाइन उपलब्धता और ऑनलाइन पंजीकरण के लिए हमारा वेब–पोर्टल इन सुविधाओं के लिए ओआरएस जैसी जीओआई वेबसाइटों से भी जुड़ा हुआ है। विशिष्ट ओपीडी में बैठे / उपलब्ध डॉक्टरों की संख्या के आधार पर वास्तविक समय के आधार पर पंजीकृत (नए / पुराने) रोगियों की स्वचालित समयबद्धता की सुविधा है। मरीजों को लंबी कतारों में खड़े होने की परेशानी से बचाने के लिए पंजीकृत टोकन प्रणाली शुरू किया गया है।

15.3 जवाहर लाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान (जीपमेर), पुदुचेरी

परिचय

जवाहर लाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान (जीपमेर) की स्थापना 1823 में फ्रांस सरकार द्वारा स्थापित "इकोले डे मेडिसिन पांडिचेरी'' का नाम बदलकर की गई। 1956 में एक नए मेडिकल कॉलेज की नींव रखी गई थी, और अस्पताल का उद्घाटन 1964 में किया गया था। जिपमेर वर्ष 2008 में भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक 'राष्ट्रीय महत्व का संस्थान' बना। यह स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट शिक्षण, अनुसंधान और रोगी देखभाल प्रदान करता है। 192 एकड़ में फैले इसके परिसर में एक प्रशासनिक ब्लॉक, एक अकादमिक केंद्र, एक नर्सिंग कॉलेज, 2137 बेड वाले सात अस्पताल ब्लॉक, सात सहायक सेवा भवन और चार आवासीय परिसर शामिल हैं। यह स्नातक स्तर से लेकर सुपर–स्पेशिएलिटी प्रशिक्षण तक सभी विषयों में 12 व्यापक प्रकार के चिकित्सा, नर्सिंग और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यक्रम संचालित करता है।

भारत सरकार के 'मेरा अस्पताल' कार्यक्रम में, जिपमेर अस्पताल को रोगी संतुष्टि श्रेणी के मामले में शीर्ष पर रखा गया था। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, जिपमेर को राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (2018) में देश के सभी चिकित्सा शिक्षण संस्थानों के बीच छठे स्थान पर रखा गया था। हाल के वर्षों में नैदानिक और बुनियादी अनुसंधान पर बल दिया गया है ताकि इसे देश का अग्रणी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान बनाया जा सके।

15.3.1 संस्थान की गतिविधियों का अवलोकन, 2018–19

(क) शिक्षा और प्रशिक्षण

i) जिपमेर में लगभग 300 संकाय सदस्य, 600 निवासी चिकित्सक और 4000 से अधिक नर्सिंग, प्रशासनिक और सहायक कर्मचारी हैं। यहां हर साल 200 स्नातक छात्र, 200 स्नातकोत्तर और 50 सुपर–स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम छात्र प्रवेश पाते हैं।

ii) कुल एमबीबीएस छात्रों की प्रवेश क्षमता 200 छात्र (जिपमेर, पुदुचेरी के लिए 150 और जिपमेर, कराईकल के लिए 50) हैं। इसके अलावा, स्नातकोत्तर कार्यक्रम (एमडी / एमएस) 23 विषयों, चिकित्सा और सर्जिकल सुपरस्पेशियलिटी (डीएम और एमसीएच, क्रमशः) 10 और 7 विषयों में कार्यक्रम, क्रमशः 8 विषयों में पीएचडी कार्यक्रम और 4 डिसिप्लिन में फैलोशिप पाठ्यक्रम की पेशकश की जाती है। अन्य पाठ्यक्रमों में बीएससी नर्सिंग (सालाना 75 + 2 सीटें), एमएससी नर्सिंग (25 सीटें), संबद्ध चिकित्सा विज्ञान में बीएससी (44 + 30 + 4 सीटें), संबद्ध चिकित्सा विज्ञान में एमएससी (25 सीटें) और सार्वजनिक स्वास्थ्य में मास्टर (एमपीएच) 25 सीटें)।

iii) जिपमेर में एक विशाल छात्रावास परिसर है जो लगभग 1100 छात्रों को समायोजित करता है, जिसमें सामान्य सुविधाओं के लिए एक अलग ब्लॉक है।

iv) संस्थान अपने प्रथम वर्ष के छात्रों (पांडिचेरी और कराईकल परिसरों दोनों) के लिए एक फाउण्डेशन पाठ्यक्रम का आयोजन करता है। यह एक 3 सप्ताह का कार्यक्रम है जो व्यावसायिकता, नैतिकता, कौशल विकास, भाषा, संचार और पारस्परिक संबंध कौशल पर जोर देता है। कार्यक्रम जुलाई 2018 में आयोजित किया गया था।

v) संस्थान का 9 वां दीक्षांत समारोह 12 अक्टूबर, 2018 को आयोजित किया गया था। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री वेंकैया नायडू, इस समारोह में मुख्य अतिथि थे, तथा माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, श्री जगत प्रकाश नड्डा ने इस समारोह में भाग लिया था। इस दीक्षांत समारोह में, विभिन्न विषयों डीएम, एमसीएच, पीएचडी, एमडी, एमएस, एमबीबीएस और फेलोशिप पाठ्यक्रम(467 डिग्रियाँ छात्रों को दी गईं। इसके अतिरिक्त, 33 स्नातकोत्कर छात्रों तथा 39 स्नातकों को इंडोमेंट मेडल दिए गए।

vi) 18 दिसंबर, 2018 को जिपमेर के निदेशक, आरपी स्वामीनाथन द्वारा हंटर थिएटर में एक 'मेडिकल वर्चुअल स्मार्ट क्लास रूम' का उद्घाटन किया गया।

vii) 26 नवंबर, 2018 को जिपमेर के निदेशक, प्रोफेसर एस विवेकानंदम द्वारा एक 'डिजिटल मेडिकल लेक्चर थिएटर' (ई–कलॉस रूम) का उद्घाटन किया गया था।

viii) 5–6 मार्च, 2019 को जिपमेर ने अपना चौथा वार्षिक अनुसंधान दिवस मनाया। मुख्य भाषण जिपमेर के निदेशक डॉ. राकेश अग्रवाल द्वारा दिया गया था। इस अवसर पर, अनुसंधान के संचालन से संबंधित विषयों पर कई कार्यशालाएं आयोजित की गईं, और देश के अन्य प्रमुख स्वास्थ्य संस्थानों से विशेष आमंत्रितों ने पाठ्यक्रम संकाय के रूप में भाग लिया। प्रो. आर. रवीन्द्रन, डीन (अनुसंधान), जेआईपीएमईआर ने पूरे कार्यक्रम का समन्वय किया।

ix) वर्ष के दौरान, संस्थान ने अपने संकाय सदस्यों और विभिन्न परियोजनाओं के लिए स्नातकोत्तर छात्र को लगभग 2.4 करोड़ रुपये रु. स्वीकृत किए।

जिपमेर का 9वां कन्वोकेशन 12 अक्टूबर, 2018 को आयोजित हुआ।

x) संस्थान ने 20–22 अप्रैल, 2018 के दौरान दूसरे अंतर्राष्ट्रीय अंडरग्रेजुएट मेडिकल स्टूडेंट्स कॉन्फ्रेंस की मेजबानी की। यह कार्यक्रम पूरे देश में युवा स्नातक मेडिकल छात्रों को बौद्धिक चर्चा और उत्पादक संगम के लिए एक राष्ट्रीय मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य स्नातक शिक्षा के स्तर को उठाना है। पुडुचेरी की माननीय उपराज्यपाल डॉ. किरण बेदी ने इस अवसर पर उद्घाटन भाषण दिया।

xi) फरवरी, 2019 के दौरान जिपमेर का दूसरा शोध नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

xii) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मेडिकल एंड हेल्थ रिसर्चः 2018 में विभिन्न विशिष्टताओं के 8 मूल लेखों के साथ दो मुद्दों को प्रकाशित किया गया था।

(ख) रोगी देखभाल सेवाएं

i) ओपीडी में हर दिन 7800 से अधिक रोगी आते हैं (औसत) जिनकी सालाना ओपीडी में 20.3 लाख से अधिक की उपस्थिति होती है। 2.5 लाख से अधिक की वार्षिक उपस्थिति के साथ दैनिक औसत आपातकालीन विभाग की उपस्थिति 700 से अधिक है। प्रवेश की वार्षिक संख्या 89,000 से अधिक है, और अस्पताल में हर साल 60.2 लाख से अधिक की जांच की जाती है।

ii) जिपमेर के ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य केंद्रों में आउटरीच गतिविधियों में प्रत्येक सेवा क्षेत्र में लगभग 2000 परिवारों (लगभग 20,000 आबादी) के लिए सेवा प्रावधान शामिल थे।

(ग) अस्पताल के बुनियादी ढांचे का विस्तार

i) वर्ष के दौरान, एक नया पीईटी / सीटी और नए ड्युल हेडिड गामा कैमरा सुविधाएं स्थापित की गईं। इनका उद्घाटन 29 नवंबर, 2018 को डॉ. एस विवेकानंदम द्वारा किया गया।

ii) जिपमेर ने अगस्त, 2018 में इटली में अपनी टेलीमेडिसिन सेवाओं का विस्तार किया। यह संस्थान दक्षिणी भारत (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और पॉन्डिचेरी) में 160 से अधिक मेडिकल कॉलेजों के लिए टेलीमेडिसिन के क्षेत्रीय संसाधन केंद्र (आरआरसी) के रूप में कार्य करता है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (एनकेएन), और अन्य देशों के साथ टेलीमेडिसिन गतिविधियों पर भी सहयोग करता है।

iii) स्थायी वित्त समिति, जिपमेर ने बहु–विषयक रोबोटिक असिस्टेड मिनिमल एक्सेस सर्जरी के लिए केंद्र स्थापित करने के लिए 32.67 करोड़ रुपये के खर्च के प्रस्ताव को मंजूरी दी है और उक्त सुविधा स्थापित हो गई है।

iv) नियोनेटोलॉजी विभाग ने 27 सितंबर, 2018 को नवजातों के उपचार में सुधार के लिए एक साक्ष्य–आधारित उच्च प्रभाव वाले 'बॉन्डिंग एंजेल' कार्यक्रम शुरू किया।

v) जिपमेर ने भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार एक नया एकीकृत आईटी विंग 'बनाया है। इस विंग ने 29 अक्टूबर, 2018 को 'जिपमेर इंटरनेट रेडियो सेवा और ऐप', 'एचडी टीवी स्टूडियो' और 'डिजिटल साइनेज' कार्यक्रम शुरू किए।

(घ) सामुदायिक लाभ कार्यक्रम

i) जिपमेर ने 6 अप्रैल, 2018 को विश्व स्वच्छता दिवस के अवसर पर पुडुचेरी के स्वच्छता कार्यकर्ताओं के लिए एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया।

ii) "तंबाकू उपयोग और स्वास्थ्य प्रभावः रोकथाम और प्रबंधन" पर एक इंटरैक्टिव सार्वजनिक सत्र 22 मई, 2018 को आयोजित किया गया।

iii) बुखार की महामारी से प्रभावित रोगियों के इलाज के लिए पिल्लयारकुप्पम, पुदुचेरी में एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

iv) अंग दान की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने के लिए, जिपमेर मृतक दाता प्रत्यारोपण समिति (जेडीडीटीसी) ने रोटरी क्लब, पांडिचेरी, बीच टाउन के सहयोग से 21 अक्टूबर, 2018 को एक अंग दान जागरूकता अभियान का आयोजन किया।

v) 13 नवंबर, 2018 को 'मैनेजमेंट ऑफ अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर इन चिल्ड्रन' पर एक इंटरैक्टिव सार्वजनिक सत्र आयोजित किया गया।

vi) 17 साल की एक लड़की का एचएलए–मैच्ड समान ट्विन डोनर बोन मैरो ट्रांसप्लांट किया गया था, जिसे तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया था। मार्च, 2017 तक, चिकित्सा ऑन्कोलॉजी विभाग ने विभिन्न इंडीकेशनों के लिए कुल 67 अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण (58 ऑटोलॉगस और 9 एलोजेनिक सहित) किए हैं।

(ङ) प्रमुख उपलब्धियाँ

i) जिपमेर ने एक स्वतंत्र मेडिकल कॉलेज के लिए एक दूसरे परिसर की स्थापना की है।

ii) जिपमेर ने एम्स मंगलगिरि और एम्स भोपाल के लिए संरक्षक संस्थान के रूप में कार्य किया।

iii) जेआईपीएमईआर ने सबरीमाला तीर्थ यात्रा के लिए एक टेलीमेडिसिन आपातकालीन परामर्श कार्यक्रम का आयोजन किया।

iv) एक बहु–अनुशासनात्मक टीम ने 16 वर्षीय व्यक्ति पर बीलो एल्वो विच्छेदन के साथ पहली बाइलेटरल हाथ प्रत्यारोपण सर्जरी की।

v) जिपमेर ने सर्जिकल ऑन्कोलॉजी विभाग में अपनी पहली साइटो–रिडक्टिव सर्जरी और हाइपरथेरिक इंट्रापेरिटोनियल कीमोथेरेपी (एचआईपीईसी) का प्रदर्शन किया।

vi) कैंसर रोगियों के इलाज के लिए एक नई स्वदेशी कोबाल्ट–60 मशीन लगाई गई ।

vii) प्लास्टिक सर्जरी विभाग ने 3 डी–प्रिंटर का अधिग्रहण किया। यह विभाग को सस्ती कीमत पर बेहतर–फिटिंग वाली कृत्रिम अंग प्रदान करने और बाह्य सेवा पर उनकी निर्भरता को कम करने में सक्षम करेगा।

(च) प्राप्त पुरस्कार और सम्मान

1. जुलाई, 2018 को नई विशिष्टताओं के विकास के लिए बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख, डॉ. ए.वी. एस.नेगी का चयन किया गया।

2. 22 सितंबर, 2018 को डॉ. विक्रम केट, प्रोफेसर और प्रमुख, सर्जरी विभाग को एशोसिएशन ऑफ नेशनल बोर्ड अक्रेडिटेड इंस्टीट्यूशन द्वारा स्थापित डीएनबी शिक्षक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

15.4 वर्धमान महावीर मेडिकल कालेज (वीएमएमसी) और सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली

परिचय

सफदरजंग अस्पताल की स्थापना 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सहयोगी बलों के लिए बेस अस्पताल के रूप में की गई थी। इसे 1954 में स्वास्थ्य मंत्रालय के तहत लाया गया। 1956 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना तक, सफदरजंग अस्पताल दक्षिण दिल्ली में एकमात्र तृतीयक देखभाल अस्पताल था।

चिकित्सा देखभाल में जरूरतों और विकास के आधार पर अस्पताल नियमित रूप से सभी विशिष्टताओं में नैदानिक और चिकित्सीय दृष्टिकोण से अपनी सुविधाओं का उन्नयन कर रहा है। 1942 में शुरू होने के समय अस्पताल में केवल 204 बिस्तर थे, जो अब बढ़कर 1531 बिस्तर हो गए हैं। अस्पताल न केवल दिल्ली के बल्कि पड़ोसी राज्यों के लाखों नागरिकों को मुफ्त में चिकित्सा सुविधा प्रदान करता है।

सफदरजंग अस्पताल स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत केंद्र सरकार का एक अस्पताल है और मंत्रालय से इसका बजट प्राप्त करता है। सफदरजंग अस्पताल परिसर में स एक मेडिकल कॉलेज है, जिसका नाम वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज है, जिसे नवंबर 2001 में स्थापित किया गया था और खेल चोटों के प्रबंधन के लिए एक छत के नीचे एकीकृत शल्य चिकित्सा, पुनर्वास और नैदानिक सेवाएं प्रदान कराने संबंधित संयुक्त विकारों के लिए 26 सितंबर 2010 को एक स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर (एसआईसी) का उद्घाटन किया गया।

ईसीजी, अल्ट्रासाउंड, एक्स–रे और सीटी स्कैन सेवाओं के अलावा 24 घंटे प्रयोगशाला की सुविधा है। स्त्री एवं प्रसूति रोग के विभागों और बर्न घटनाओं के लिए अलग विभाग हैं। अस्पताल कार्डियक कैथीटेराइजेशन, लिथोट्रिप्सी, स्लीप स्टडीज, एंडोस्कोपी, आर्थोस्कोपी, वीडियो ईईजी, सर्पिल सीटी, एमआरआई, कलर डॉपलर, मैमोग्राफी और बीएसी टी एएलईटी माइक्रोबायोलॉजी रैपिड डायग्नोस्टिक सिस्टम की सेवाएं भी प्रदान करता है। अस्पताल ने रेडियोथेरेपी विभाग के लिए एक नई कोबाल्ट रेडियोथेरेपी इकाई को जोड़ा है।

इस अस्पताल में पिछले 02 वर्षों में (जनवरी से दिसंबर) भर्ती किए गए कुल मरीजों की संख्या और ऑपरेशन निम्नानुसार हैं :–

वर्ष	भर्ती	बड़ी सर्जरी	छोटी सर्जरी	कुल (ऑपरेशन)
2017	1,89,970	33,972	67,439	1,01,411
2018	1,84,166	35,276	47,761	83,037

आंकड़े (प्रयोगशाला परीक्षण और एक्स–रे परीक्षण)

वर्ष	प्रयोगशाला परीक्षण की सं.	एक्स–रे परीक्षण की सं.
2017	71,06,164	3,56,174
2018	89,69,938	4,20,391

– वर्ष 2017 के दौरान स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग में हुई डिलीवरी की कुल संख्या 27,913 है और वर्ष 2018 के दौरान 28098 है।

– वर्ष 2016 के दौरान ओपीडी मरीजों की कुल संख्या 31,11,973 और वर्ष 2017 के दौरान 31,09,487 और वर्ष 2018 के दौरान 32,97,638 है

एसआईसी में चालू वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान मरीजों की उपस्थिति और सर्जरी

क्रं. सं.	विवरण	2017	2018
1.	ओपीडी अटेंडेंस कैजुअल्टी अटेंडेंस सहित	109033	120003
2.	भर्ती मरीज	3297	3204
3.	सर्जरी की संख्या	3665	2790
4.	मामूली सर्जिकल प्रक्रिया	8197	8568
5.	फिजियोथेरेपी	68461	67713

वर्ष 2018–19 की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ:

1. अस्पताल को पुनर्विकास कार्य (चरण–I) के तहत उन्नत किया गया है। इसमें सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक (430 + 125 बेड के साथ), स्टेट ऑफ आर्ट प्राइवेट ब्लॉक (206 + 22 आईसीयू बेड), इमरजेंसी ब्लॉक (500 बेड) शामिल हैं। यह परियोजना 21 फरवरी 2014 को आधारशिला रखे जाने के साथ शुरू हुई थी। इमरजेंसी ब्लॉक और सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक की इमारत की संरचना पूरी हो गई है। न्यू इमरजेंसी ब्लॉक 07.2.2018 से कार्यरत है। माननीय प्रधान मंत्री ने 29/06/2018 को न्यू इमरजेंसी ब्लॉक और सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का उद्घाटन किया। दोनों ब्लॉक अब कार्यात्मक हैं।

2. 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 27.04.2018 को विज्ञान भवन में एक प्लेटिनम जुबली समारोह मनाया गया।

SUPER SPECIALITY BLOCK
SAFDARJUNG HOSPITAL CAMPUS
CONNECTING TUNNEL
NATIONAL

आपातकालीन ब्लॉक

सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक

3. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने 27.04.2018 को विज्ञान भवन मे सफदरजंग अस्पताल पर स्मारक डाक टिकट जारी किया।

4. सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक में नमूना संग्रह केंद्र प्रारंभ हुआ। एसएसबी में संग्रह केंद्र शुरू किया गया है और यह एसएसबी में आने वाले रोगियों के लिए काम कर रहा है।

5. आणविक प्रयोगशाला – गुर्दे के प्रत्यारोपण के रोगियों आदि के लाभ के लिए एचएलए टाइपिंग पर कार्य कर रहा है।

6. विशेष हेमटोलॉजी प्रयोगशाला में ल्यूकेमियास की इम्यूनोफेनोटाइपिंग।

7. ट्यूमर के निश्चित निदान और रोग के निदान

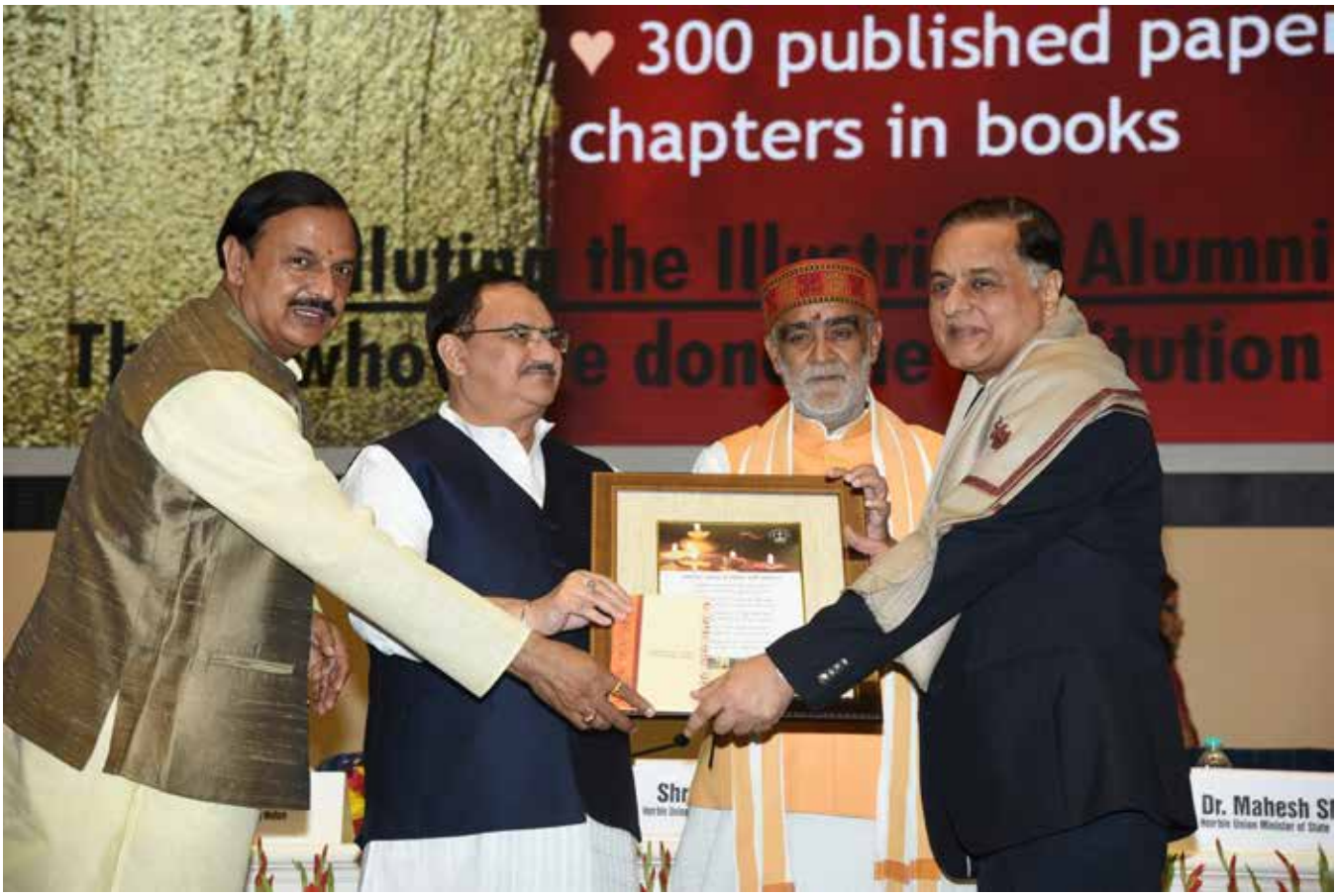

के लिए सीरम (केमिलुमिनेशन द्वारा) और ऊतकों (आईएचसी / आईसीसी द्वारा) में किए गए ट्यूमर मार्कर।

8. इंट्रा–ऑपरेटिव निदान सुविधा प्रदान की जाती है।

9. त्वचा और गुर्दे के विकारों के निदान के लिए इम्यूनोफ्लोरेसेंस।

10. सेंट्रल कलेक्शन सेंटर में, ब्लड सैंपल कलेक्शन काउंटर बढ़ाए गए और टेस्ट मापदंडों की संख्या भी बढ़ाई गई।

11. आपातकालीन प्रयोगशाला में जांच की संख्या बढ़कर 1.5 लाख / महीना हो गई है।

12. प्रसवपूर्व कार्यक्रमों का पालन किया जा रहा है, सभी एएनसी रोगियों का थायराइड कार्यों के लिए परीक्षण किया गया।

13. एनओटीटीओ के हिस्से के रूप में सर्वाइकल ट्रांसप्लांट के लिए सीरम परीक्षण किया गया।

14. 25 अगस्त से 8 सितंबर 2018 तक नेत्रदान पखवाड़े का आयोजन, आम जनता में नेत्रदान को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जन–जागरूकता कार्यक्रम, स्कूल शिक्षा और अस्पताल जागरूकता कार्यक्रम चलाए गए, बैनर, पोस्टर आदि लगाए गए।

15. ब्लड बैंक ने निम्नलिखित उपलब्धियां प्राप्त की:

क्र. सं.	कार्य	वर्ष 2018 में
1.	दान	37,818
2.	जारी किया गया ब्लड यूनिट	63,358.75
3.	एबीओ/आरएच समूहीकरण	7,28,355
4.	टेस्ट आयोजित	2,10,382
5.	रक्त घटक तैयार	98,849
6.	प्लेटलेट एफेरेसिस प्रक्रिया	249
7.	कॉम्ब टेस्ट	10,678
8.	क्रॉस मैच	2,97,870

16. ब्लड बैंक के लिए स्वचालित एलिसा प्रोसेसर, सेल सेपरेटर (प्लेटलेट एफेरेसिस), ऑटोमेटेड कंपोनेंट सेपरेटर, हेमोटोलॉजी एनालाइजर (फाइव पार्ट डिफरेंशियल) जैसे उपकरण खरीदे गए।

17. नेत्र विभाग को 2018 में दो उन्नत फोकोमलसीफीकेशन सिस्टम से लैस किया गया है।

18. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और जीजीएसआईपी विश्वविद्यालय से आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के बाद 5 सीटों के साथ मनोरोग (एमडी मनोचिकित्सा) में स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम शुरू करना। सभी सीटें उम्मीदवारों द्वारा एनईईटी पीजी 2018 के माध्यम से भरी गई।

19. अनूठी पहल में वीएमएमसी के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए एक परामर्श और कल्याण केंद्र शुरू किया गया जिसे अन्य चिकित्सा संस्थानों द्वारा भी अपनाया गया।

20. आम जनता में मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभाग में साप्ताहिक जन व्याख्यान शुरू करना।

21. प्रत्येक एमबीबीएस बैच के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले इंटर्न छात्र को हर महीने सर्वश्रेष्ठ इंटर्न अवार्ड से सम्मानित करना।

22. सर्जरी विभाग ने एमसीआई की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले प्रारंभिक विभाग के रूप में और वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल में स्नातकोत्तर शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए 20 सितंबर 2018 को क्लिनिको रेडियोलॉजिकल बैठक की शुरूआत की गई हैं।

23. सफदरजंग अस्पताल में "स्वच्छता ही सेवा है" अभियान शुरू किया गया और 22.9.18 को एक रैली का आयोजन किया गया और इसमें सभी विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया और अस्पताल के स्वच्छ रख–रखाव के लिए संकल्प लिया। 15.09.2018 से 02.10.2018 तक स्वच्छता पखवाड़े का भी आयोजन किया गया है।

24. न्यू इमरजेंसी ब्लॉक में पीएमआर सेवाओं को चलाना।

25. पल्मोनरी रिहैबिलिटेशनः सरकारी तंत्र में प्रथम।

26. सुपर स्पेशलिटी ब्लॉकः न्यूरोलॉजी और न्यूरोसर्जरी में न्यूरो–पुनर्वास।

27. विकलांग व्यक्तियों के लिए आउटडोर एम्बुलेशन प्रशिक्षण पार्क।

28. पीएमआर विभाग में सप्ताह में दो बार ऑपरेशन थियेटर शुरू किया गया।

15.5 लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज और श्रीमती एस.के. अस्पताल, नई दिल्ली

परिचय

लेडी हार्डिंग महिला मेडिकल कॉलेज की स्थापना 17 मार्च, 1914 को की गई थी। कॉलेज और अस्पताल 17 फरवरी 1916 को भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड हार्डिंग द्वारा औपचारिक रूप से खोला गया था।

पहले वर्ष में प्रवेश की संख्या 1916 में 16 प्रति वर्ष से धीरे–धीरे बढ़कर 1956 में 60 हो गई। 1961 में प्रवेश को बढ़ाकर 100 कर दिया गया और 1970 में इसे बढ़ाकर 130 कर दिया गया। केंद्रीय शैक्षणिक संस्थान (प्रवेश में आरक्षण) अधिनियम, 2006 को लागू करने के लिए एलएचएमसी ने स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश 2008 में बढ़ा कर 150 और अब प्रत्येक वर्ष 200 कर दिया गया है।

वर्तमान में लेडी हार्डिंग महिला मेडिकल कॉलेज में 152 पीजी उम्मीदवारों, एमसीएच बाल चिकित्सा सर्जरी की 4 सीटों और डीएम नैनोटॉलॉजी की 4 सीटों पर प्रवेश दिया जा रहा है।

अवसंरचनात्मक विकास

व्यापक पुनर्विकास योजना जो पिछले चार वर्षों से रुकी हुई थी, उसे फिर से शुरू कर दिया गया है और इसका क्रियान्वयन तत्परता से शुरू हो गया है और जल्द ही यह काम करना शुरू कर देगा। इस एकल परियोजना ने गुणवत्तापूर्ण रोगी परिचर्या का एक नया मंच बनाकर हमारी संस्थागत क्षमता को आने वाले समय में व्यापक रूप से बदलने की शक्ति प्राप्त की है और इसके साथ संयोजित कर दिया है।

वर्ष 2018 में महत्वपूर्ण उपलब्धियां

- लेडी हार्डिंग महिला मेडिकल कॉलेज और एसएसकेएच

ने प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना के तहत रोगियों की भर्ती और उपचार कार्य शुरू कर दिया है।

- वयस्क के रूप में परिपक्व हो रहे किशोरों को थेलेसिमिया परिचर्या को बेहतर बनाने के लिए औषधि एवं बाल चिकित्सा विभाग के बीच सहयोगी आधार पर एक थेलेसिमिया ट्रांजिशन केयरमॉडल का विकास किया गया है।

प्रारंभ की गई नई पहलें

- प्रसवपूर्व आणविक निदान और साइटो–जेनेटिक्स का संचालन करने के लिए निदान (एनआईडीएएन) केंद्र नामक एक जेनेटिक डायग्नोस्टिक सेंटर लेडी हार्डिंग महिला मेडिकल कॉलेज में आ रहा है। यह प्रीनेटल डायग्नोसिस, प्रीवेंशन एंड ट्रीटमेंट ऑफ जेनेटिक डिसऑर्डर में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

- प्रकोप एवं अत्यधिक रूग्णता की संभावना वाले वायरल खतरों की बढ़ती संख्या को समय पर चिन्हित करने हेतु एक उच्च स्वास्थ्य व्यवसायी प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में कार्य करने और अवसंरचना तथा विशेषज्ञता का विकास करने के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने वायरस अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला की स्थापना हेतु सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग को अनुमोदन दिया है।

विशेष उपलब्धियाँ / प्रमुख घटनाएँ

- तम्बाकू से संबंधित रोगों की संख्या को कम करने के लिए निवारक जागरूकता कार्यक्रमः दंत चिकित्सा और मैक्सिलोफेशियल सर्जरी विभाग और वक्ष रोग के विभाग के तत्वावधान में जागरूकता सृजन गतिविधियों का आयोजन किया गया है।

- दुर्घटना एवं आपात विभाग ने प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 14.11.2018 से 27.11.2018 तक अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में "जन चेतना एवं स्वास्थ्य शिविर" का आयोजन किया।

- लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और संबंद्ध अस्पतालों ने स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, दिवाली, भारत पर्व, कृषि उन्नति मेला, अंतर्राष्ट्रीय सौर शिखर सम्मेलन, पार्टनर फोरम, आईआईटीएफ 14 से 28 नवंबर, 2018 पार्टनर्स फ़ोरम 10 से 14 दिसंबर 2018 के दौरान चिकित्सा आवश्यकता कार्य में भाग लिया।

मशीनरी और उपकरण की उन्नति

- अस्पताल और कॉलेज के लिए 24 करोड़ रु. (लगभग) लागत की मशीनरी और उपकरण की खरीद।

- 3 TESLA एमआरआई मशीनें लगाई गई हैं और बाकी उपकरणों की खरीद से रोगी परिचर्या सेवाओं में काफी सुधार हुआ है।

- एन के एन से इंटरनेट कनेक्टिविटी ने एचएमआईएस सहित शिक्षण और रोगी परिचर्या सेवाओं में महत्वपूर्ण सुधार किया है।

इनडोर और ओपीडी सुविधाएं

वर्ष 2018 के दौरान एसएसकेएच द्वारा इनडोर में भर्ती मरीजों के विवरण सहित ओपीडी उपस्थिति निम्नवत् हैः–

क्र. सं.	विभाग	इनडोर मरीज	ओपीडी मरीज	ऑपरेशन		बिस्तर ऑक्यूपेंसी	ठहरने की औसत अवधि
				बड़े	छोटे		
1	स्त्री रोग	2695	67190	797	557	78.0%	7.6
2	परिवार कल्याण	358	4000	962	-	-	-
3	प्रसूतिरोग विज्ञान	19802	59850(एएनसी) 2564(पीएनयी)	4388	7318	111.0%	5.6
4	मेडिसिन	7417	143873	-	-	72.3%	3.2

5	सर्जरी	4991	53523	1500	94	101.2%	5.0
6	अस्थि रोग	1563	71177	445	27	60.4%	8.1
7	नेत्र विज्ञान	966	45631	826	10	31.0%	3.5
8	दंत चिकित्सा	265	24708	72	117	बिस्तर निर्दिष्ट नहीं	-
9	ईएनटी	1063	44442	807	207	30.4%	3.7
10	मानसिक रोग चिकित्सा	680	33032	-	-	78.9%	3.7
11	त्वचा और एसटीडी	431	66199	-	-	78.9%	10.7
12	खिचड़ी पुर (एच.सी)	-	27223	-	-	-	-
13	स्त्री रोग कैजुअल्टी	-	18721	-	-	-	-
14	ए/ई कैजुअल्टी	-	129163	-	-	-	-
कुल		**40231**	**791296**	**9797**	**8330**	**86.7%**	**5.3**

शैक्षणिक गतिविधियाँ

स्नातक छात्र उपलब्धियां:

उत्तीर्णता प्रतिशत और रैंक धारकों का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र. सं.	परीक्षा	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
1.	I एमबीबीएस	198	97.00%
2.	II एमबीबीएस	176	84.00%
3.	III एमबीबीएस पार्ट-I	166	83.40%
4.	III एमबीबीएस पार्ट-II	176	90.72%

नामांकित स्नातकोत्तर छात्र

क्र. सं.	विशेषता	नामांकित छात्रों की संख्या 2018	भर्ती छात्रों की संख्या 2018
1	संवेदना हरण	29	10
2	एनाटॉमी	04	2
3	जीव रसायन	03	-
4	सामुदायिक चिकित्सा	14	07
5	त्वचा विज्ञान	13	05
6	न्यायिक दवाइया	04	02
7	आम दवाई	48	15
8	जनरल सर्जरी	32	11
9	प्रसूति और स्त्री रोग	48	16
10	बाल चिकित्सा विज्ञान	62	25
11	औषध	06	02
12	विकृति विज्ञान	21	07
13	सूक्ष्मजीव विज्ञान	06	06
14	रेडियोलोजी	18	06
15	फिजियोलॉजी	03	03
16	अस्थि रोग	15	05
17	नेत्र विज्ञान	12	03
18	ईएनटी	12	04
19	मानसिक रोगों चिकित्सा	09	03
20	एमडीएस	04	02
21	डी.एम. (न्यूनैटॉलॉजी)	12	04
22	एमसीएच (बाल चिकित्सा सर्जरी)	12	04

मुख्य अतिथि के रूप में भारत के उप राष्ट्रपति के साथ एलएचएमसी का कन्वोकेशन समारोह 2018

इस वर्ष 105 छात्रों ने विभिन्न विषयों में अपनी एमडी/एमएस की अंतिम परीक्षा उर्त्तीण की। विभिन्न विशिष्टताओं में स्नातकोत्तर डिग्री के लिए उर्त्तीणता प्रतिशत 92.92% थी। सुपर स्पेशिएलिटी के लिए, 08 छात्रों ने डीएम./एमसीएच की अंतिम परीक्षा उर्त्तीण की। जिसमें उत्तीर्णता प्रतिशत 100% थी।

15.6 कलावती सरन बाल अस्पताल

परिचय

कलावती सरन बाल अस्पताल राष्ट्रीय महत्व का एक मुख्य बाल रेफरल अस्पताल है। अस्पताल ने विशेष रूप से 18 वर्ष तक के बाल रोगियों के लिए चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए वर्ष 1965 में कार्य करना शुरू किया। फिलहाल इसमें 375 बिस्तर हैं। केएससीएच (जेआईसीए) के सुधार की योजना के तहत इस अस्पताल की बिस्तरों की संख्या को 500 तक बढ़ाया जा रहा है।

कलावती सरन बाल अस्पताल देश के सबसे व्यस्त बाल अस्पतालों में से एक है और यहां दिल्ली और पड़ोसी राज्यों से प्रतिदिन 800–1000 बच्चों की ओपीडी उपस्थिति होती है और प्रतिदिन 80–100 नए दाखिले देता है। अस्पताल पोलियोमाइलाइटिस, टेटनस और खसरा के लिए एक मुख्य केंद्र है। इसमें चौबीसों घंटे मरीजों की सीधी भर्ती के साथ अत्याधुनिक पीडियाट्रिक इंटेंसिव केयर और एक अलग पीडियाट्रिक इमरजेंसी है। इसमें डायरिया प्रशिक्षण और उपचार इकाई भी शामिल है, जो देश की पहली ऐसी इकाई है, जिसे डब्ल्यूएचओ और भारत सरकार ने भी डायरिया रोगों के एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में मान्यता दी है। अस्पताल ने एआरआई, यूआईपी और अन्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी सेवा की है।

अस्पताल में एक नियोनेटल विंग, जिसमें 80 बिस्तर हैं। जिसमें एक वर्ष में 12,000 प्रसव होते हैं, और यह समय से पहले जन्मे और बीमार नवजात शिशुओं को वेंटिलेटर देखभाल सहित अत्याधुनिक सेवाएं प्रदान कर रहा है। यह संस्था वास्तविक अर्थों में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल है, जिसमें न्यूरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और न्यूट्रिशन, हेमटोलॉजी, पल्मोनोलॉजी और एंडोक्रिनोलॉजी जैसी पूरी तरह से विकसित उप–विशेषज्ञताएं हैं।

कलावती सरन बाल अस्पताल के इंडो–जापान फ्रेंडशिप ब्लॉक का निर्माण ओपीडी इमरजेंसी पीडियाट्रिक आईसीयू और प्रयोगशाला सेवाओं, बाल और किशोर स्वास्थ्य संवर्धन क्लिनिक, भौतिकीय चिकित्सा और पुनर्वास सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए किया गया है। इस नई ब्लॉक बिल्डिंग में विभिन्न वर्गों के लिए नवीनतम उपकरण भी रखे गए हैं। अस्पताल अपर्याप्त जगह की समस्या को दूर करने और संस्था के तकनीकी उन्नयन में मददगार रहा है।

अस्पताल ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की मंजूरी से, यूनिसेफ के सहयोग से एक "राष्ट्रीय पोषण पुनर्वास संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र" स्थापित किया है। केंद्र में गंभीर कुपोषण (एसएएम) के प्रबंधन के लिए 12 समर्पित बिस्तर हैं। केंद्र ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुरोध पर प्रशिक्षकों के राष्ट्रीय स्तर के दो प्रशिक्षणों का आयोजन किया है।

कलावती सरन बाल अस्पताल को केन्द्र आधारित नवजात परिचर्या के राष्ट्रीय नोडल केन्द्र के रूप में पदनामित किया गया है।

आईवाईसीएफ प्रक्रियाओं को मजबूत करने के लिए कलावती सरन बाल अस्पताल में शिशु और युवा बाल आहार परामर्श केंद्र शुरू किया गया। अस्पताल में ऑटिज्म मूल्यांकन सेल भी शुरू किया गया। भौतिकीय चिकित्सा और पुनर्वास विभाग में हर महीने के पहले बुधवार (दोपहर) को हीमोफिलिया फॉलो–अप क्लिनिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। लिम्फोमा और ल्यूकेमिया का इलाज किए गए बच्चों के फॉलो–अप के लिए चिकित्सा (एसीटी) क्लिनिक के पूरा होने के एक महीने बाद हर महीने के पहले सोमवार में शुरू किया गया।

कलावती सरन बाल अस्पताल की 1/4/18 से 31/3/19 अवधि के आंकड़े निम्नानुसार है:

क्र.सं.	विवरण	
1	बिस्तरों की संख्या	375
2	ओपीडी अटेंडेंस	278731
3	हताहत	58326
4	भरे हुए बिस्तर	133.34
5	सर्जरी – मेजर	2215
6	सर्जरी – माइनर	3447
7	अंतरंग मरीज	31587
8	नवजात शिशु और नर्सरी देखभाल	3079

प्रमुख उपलब्धियां

- बाल चिकित्सा विभाग के तहत 20 बिस्तरों वाले पीडियाट्रिक नेफ्रोलॉजी यूनिट की मंजूरी।
- मेडिक काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) द्वारा बाल चिकित्सा विभाग में एमडी पाठ्यक्रमों (21 सीटों) की मान्यता।
- ओटी और बाल चिकित्सा सर्जरी वार्ड में सर्जिकल रोगियों के लिए डब्ल्यूएचओ सुरक्षा जांच सूची का अनिवार्य कार्यान्वयन।

सफलताएं

- अस्पताल के सभी वार्डों/इकाइयों/ओटी में केंद्रीकृत गैस पाइप लाइन के माध्यम से तरल ऑक्सीजन गैस की बढ़ती भंडारण क्षमता के साथ नए गैस मैनीफोल्ड संयंत्र का निर्माण किया गया है।
- मैकेनाइज्ड क्लीनिंग सुविधा एक राइड–ऑन स्क्रबर और तीन मिनी स्क्रबर ऑटोमेटेड क्लीनिंग मशीनों की वृद्धि के साथ शुरू हुई।
- मेडिसिन/ड्रग्स के उचित भंडारण के लिए नए मेडिकल स्टोर का निर्माण किया गया है।
- हर महीने के एक–एक सोमवार के अंतराल पर सोमवार के दिन कंटीनेंस केयर क्लिनिक और बाल चिकित्सा सर्जरी सॉलिड ट्यूमर ऑन्कोलॉजी क्लिनिक शुरू किया।

विभागाध्यक्ष, बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग, एम्स, मई 2018 में के.एस.सी.एच में लेप्रोस्कोपिक कार्यशाला में डॉ. पीटर डैनियल खारियोन्ग को कार्यशाला प्रमाण पत्र देते हुए।

बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग, एलएचएमसी, द्वारा मई, 2018 में केएससीएच में आयोजित लेप्रोस्कोपिक कार्यशाला में डॉ. विजय कुंडल को अनुदेशक प्रमाण पत्र देते हुए विभागाध्यक्ष, बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग, एलएचएमसी।

नई पहल

- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के लाभों के विस्तार के लिए केन्द्र की स्थापना।
- स्वास्थ्य में प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए डब्ल्यूएचओ सहयोग केंद्र के रूप में किशोर स्वास्थ्य केंद्र नामित किया गया है।
- गुणवत्ता सुधार (क्यूआई) सेल विभाग में स्थापित किया गया था और वर्ष 2018 को गुणवत्ता सुधार वर्ष के रूप में मनाया गया। केएसएचसी एवं दिल्ली के अन्य अस्पतालों के डॉक्टरों तथा नर्सों के लिए कई कार्यशालाएं आयोजित की जा रही है।
- एनआरसी और आईवाईसीएफ में मातृ पोषण की स्थिति में सुधार करने के लिए मातृ पोषण स्थिति और माँ के परामर्श का आकलन।
- बच्चों की देखभाल के लिए बिस्तर के साथ लगी पोर्टेबल ईईजी मशीन।
- आपातकालीन पंजीकरण सेवाओं का उन्नयन।
- रोगी प्रतीक्षा–क्षेत्र का उन्नयन।
- आगंतुकों को सहायता प्रदान करने के लिए 'मे आई हेल्प यू' काउंटर की स्थापना की गई है।

15.7 पीजीआईएमईआर और डॉ. राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल, नई दिल्ली

परिचय

1932 से मूल रूप से विलिंगडन अस्पताल और नर्सिंग होम के रूप में जाना जाता था और बाद में डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के रूप में नाम बदला गया, 37 एकड़ क्षेत्र में फैले अस्पताल को 1447 बिस्तरों वाले अस्पताल में विस्तरित किया गया है। अस्पताल अन्य सामान्य रोगियों के अलावा सी.जी.एच.एस. लाभार्थियों, सांसदों, पूर्व सांसदों, मंत्रियों, न्यायाधीशों और अन्य वी.वी.आई.पी. गणमान्य व्यक्तियों की जरूरतों को पूरा करता है। प्रसूति नर्सिंग होम सहित नर्सिंग होम में सीजीएचएस और अन्य लाभार्थियों के लिए 75 बिस्तर हैं।

अस्पताल आपातकालीन और कैजुअल्टी सहित लगभग 17. 39 लाख आउटडोर रोगियों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है। जनवरी, 2018 से सितंबर, 2018 की अवधि में लगभग 69,554 इनडोर रोगियों को भर्ती किया गया।

अस्पताल में चौबीसों घंटे आपातकालीन सेवाएं हैं और यहां बिस्तर उपलब्ध हैं अथवा नहीं, आपात उपस्कर की जरूरत वाले किसी भी मरीज को भर्ती करने से इंकार करने की नीति नहीं है। अस्पताल में नर्सिंग होम उपचार और विशेष परीक्षणों के लिए कुछ मामूली शुल्क को छोड़कर सभी सेवाएं मुफ्त हैं।

इसके अलावा, जनवरी से सितंबर, 2018 की अवधि के दौरान की गई लैब जांच और एक्स–रे की कुल संख्या क्रमशः 10,16,464 और 1,17,388 थी।

सेवाएं

अस्पताल लगभग सभी प्रमुख विषयों को कवर करते हुए विभिन्न स्पेशलिटीज और सुपर स्पेशलिटीज़ में सेवाएं प्रदान करता है।

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पीजीआईएमईआर)

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान ने आधुनिक औषधि विज्ञान और अन्य संबद्ध विज्ञानों में स्नातकोत्तर शिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से भौतिकीय और जैविक विज्ञान सहित विभिन्न शाखाओं में अनुसंधान की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से शैक्षणिक वर्ष 2008–09 से कार्य करना शुरू किया। यह संस्थान वर्तमान में गुरु

गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ (जीजीएसआईपी) विश्वविद्यालय, दिल्ली से संबद्ध है। वर्ष 2008 में, भारत सरकार ने कुल 28 पीजी डिग्री / डिप्लोमा सीटें और 2 सीटें अति–विशिष्ट पाठ्यक्रमों में स्वीकृत दी। वर्तमान में, इसमें पीजी डिग्री / डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की 168 सीटें और सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रमों के लिए 39 सीटें हैं।

पीजीआईएमईआर के सभागार में चिकित्सा शिक्षा प्रौद्योगिकी (एमईटी) को कार्यात्मक बनाया गया है। पीजीआईएमईआर में 824 कमरों के साथ वाले नए होस्टल ब्लॉक का आगे का निर्माण रु. 181.00 करोड़ की कुल लागत से चल रहा है।

नई उपलब्धियां

- अब, डॉ. आरएमएल अस्पताल में भी सुपर स्पेशियलिटी ओपीडी भी है।
- मेडिकल सुपर स्पेशियलिटी वार्ड को कार्यात्मक बनाया गया है।
- 3 बेसमेंट, 1 ग्राउंड फ्लोर और 17 फ्लोर वाले सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक के निर्माण के लिए 572.61 करोड़ रु. की ईएफसी को मंजूरी दी गई है।
- एनडीएमसी द्वारा 272 बिस्तरों और 7 ऑपरेशन थियेटरों वाले एनडीएमसी द्वारा मोतीबाग में मल्टी–स्पेशिएलिटी हॉस्पिटल का निर्माण दो वर्षों में किया जाएगा और यह निर्णय लिया गया है कि उक्त अस्पताल को डॉ. आरएमएल अस्पताल द्वारा चलाया जाएगा।
- यूरोलॉजी विभाग में लिथोट्रिप्सी क्लिनिक शुरू किया गया है। इसके अलावा, यूरोलॉजी वार्ड और ओपीडी का नवीनीकरण किया गया है।
- ईसीएस भवन में 3 आपातकालीन ओटी टेबल प्रदान किए गए हैं।
- माइक्रोबायोलॉजी लैब को पुनर्निर्मित किया गया है और ओपीडी भवन की तीसरी मंजिल में स्थानांतरित किया गया है।
- कार्डियोलॉजी के मरीजों के लिए डे केयर यूनिट शुरू की गई है

- अधिक रक्तदाताओं को शामिल करने के लिए ब्लड बैंक का विस्तार किया गया है।
- नेत्र विज्ञान ओपीडी को भी पुनर्निर्मित किया गया है।
- डॉ. आरएमएल अस्पताल में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया और सेंट्रल पार्क में विकलांगो के अनुकूल शौचालय का निर्माण चल रहा है।

15.8 राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु, (निम्हांस), बेंगलुरु

निम्हांस अपने समवर्गी क्षेत्रों और शिक्षण, अनुसंधान और समुदाय उन्मुखी गतिविधियों के साथ मनोरोग, न्यूरोलॉजी और न्यूरोसर्जरी के क्षेत्र में एक तृतीयक देखभाल अस्पताल है जो संस्थान के मुख्य बल वाला क्षेत्र है। संस्थान का उद्देश्य व्यापक रोगी देखभाल सेवाएं प्रदान करना और मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान की उन्नित और विकास को बढ़ावा देना है। वर्ष 2018–19 के दौरान, देश और दुनिया भर के विभिन्न हिस्सों से कुल 5,65,982 रोगियों ने मनोरोग और तंत्रिका विज्ञान समस्याओं के लिए संस्थान में विशेष चिकित्सा देखभाल प्राप्त की। लगभग 75% रोगियों ने बिना किसी खर्च के या अत्यधिक रियायती लागत पर उपचार प्राप्त किया। गंजुर, मद्दुर, कनकपुरा, और सकलावारातालुका में 3,795 रोगियों द्वारा विस्तार सेवाओं की मांग की गई थी। इसके अलावा, 15,000 मरीजों के लिए टेली आफ्टर केयर परामर्श और सीएएम नियमित टेली फॉलो–अप संचालित किया गया, जो निम्हांस में डॉक्टरों और रोगियों के बीच सीधा परामर्श। टेली–ओसीटी + वीकेएन टेली–इको + डिजिटल एकेडमी सेशन + ई–कॉन्सुलेट्स में 6500, शामिल हैं, जिसमें कंसल्ट में टेली कंसल्टेशन निम्हांस डॉक्टरों ने संयुक्त रूप से पीसीडी के साथ मरीजों को अपने प्रशिक्षण के भाग के रूप में देखा।

15.9 केन्द्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान (सीआईपी), रांची

केन्द्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान, रांची भारत में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक प्रमुख संस्थान है। यह मानसिक और न्यूरोलॉजिकल विकारों के लिए नैदानिक सेवाएं प्रदान करता है, मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में जनशक्ति को प्रशिक्षित करता है जिसमें मनोचिकित्सा में 09 एमडी और 18 डीपीएम, नैदानिक मनोविज्ञान में 4 पीएचडी और

18 एमफिल, मनोरोगी सामाजिक कार्य में 12 एमफिल और मनोरोग नर्सिंग में 18 डिप्लोमा शामिल हैं। संस्थान में 2018 में 4018 अंतरंग भर्ती और 92901 की कुल ओपीडी उपस्थिति के साथ 643 रोगियों की बिस्तर क्षमता है। संस्थान द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में नैदानिक देखभाल, विशेष क्लीनिक शामिल हैं, जिसमें व्यसन मनोरोग, बाल और किशोर मनोरोग, जराचिकित्सा मनोरोग और 20 क्लिनिक है, सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रम, आपातकालीन सेवाएं आदि क्लीनिक शामिल हैं। इनके अलावा, पुनर्विकास गतिविधियों में अत्याधुनिक 3 टेस्ला fMRI प्रणाली की स्थापना, गहरी मस्तिष्क उत्तेजना, मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न बाह्य परियोजनाओं को पूरा करना शामिल है।

15.10 प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई)

परिचय

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) का उद्देश्य सामान्य रूप से देश के विभिन्न हिस्सों में विश्वसनीय एवं सस्ती स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता में असंतुलन को ठीक करना और विशेष रूप से अल्पसेवित राज्यों में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा के लिए सुविधाओं में वृद्धि करना है। एक केंद्रीय क्षेत्र योजना पीएमएसएसवाई के दो घटक हैं:

(क) एम्स जैसे संस्थानों की स्थापना: अब तक कुल 22 नए एम्स की घोषणा की गई है।

- चरण–I के तहत अनुमोदित छह एम्स (एम्स–भोपाल, एम्स–भुवनेश्वर, एम्स–जोधपुर, एम्स–पटना, एम्स–रायपुर और एम्स–ऋषिकेश) कार्यात्मक हैं।
- अब तक सोलह (16) अतिरिक्त एम्स की घोषणा; जिसमें से 15 पहले से ही स्वीकृत हैं; बिहार में 01 और एम्स के लिए– भूमि आवंटन का इंतजार है।
    - o 11 एम्स प्रोजेक्ट के लिए प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स (पीएमसी) की नियुक्ति की गई, जिसमें से 8 प्रोजेक्ट के लिए टेंडर भी दिए गए।
    - o 2018–19 में एम्स रायबरेली, एम्स मंगलगिरी और एम्स गोरखपुर में ओपीडी सेवाएं शुरू हो गई हैं।
    - o एम्स, मंगलगिरि और एम्स, नागपुर में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए शैक्षणिक सत्र 2018–19 में 50 छात्रों के साथ शुरू किया गया है।

(ख) मौजूदा राज्य सरकार मेडिकल कॉलेज/संस्थानों का उन्नयन

इस घटक के तहत 75 परियोजनाओं पर विचार किया गया है।

- इस वर्ष के दौरान 16 जीएमसी के उन्नयन का कार्य पूरा किया गया है, जो पिछले वर्षों में पूरी की गई 15 जीएमसी परियोजनाओं के अलावा है।
- चरण–IV, V(क) और V (ख) के तहत उन्नयन के लिए 17 नए सरकारी चिकित्सा कॉलेजों / संस्थानों पर कार्य प्रारंभ किया गया है। जिसमें से 13 जीएमसी के अपग्रेडेशन प्रोजेक्ट्स के लिए कार्य सुपुर्द कर दिया गया है।

नए एम्स की स्थापना

चरण–I: पीएमएसएसवाई के पहले चरण में, 6 एम्स भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर, पटना, रायपुर और ऋषिकेश में एक–एक, की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया गया जिसमें प्रति एम्स अनुमोदित लागत 820.00 करोड़ रु. की थी। 6 एम्स में एमबीबीएस के लिए प्रत्येक में 50 छात्रों के लिए तथा परवर्ती वर्षों में 100 छात्र प्रत्येक एम्स के लिए शैक्षणिक सत्र सितंबर, 2012 में शुरू हुआ है, और सितंबर, 2013 से बी.एससी (नर्सिंग) के 60 छात्रों के लिए प्रारंभ हुआ। वर्ष के दौरान, चार एम्स यथा भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर और ऋषिकेश में एमबीबीएस छात्रों को और बी.एससी (नर्सिंग) के छात्रों को 6 एम्स में डिग्री प्रदान करने हेतु प्रथम दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया।

छः एम्स में लगभग सभी विशेष और सुपर स्पेशियलिटी विभाग कार्यात्मक हैं। इसके अलावा वर्ष के दौरान अस्पताल में 1532 बिस्तर और 422 पीजी सीटें जोड़ी गईं।

छह एम्स के स्पेशलियटी और सुपर स्पेशलिटी विभागों की वर्तमान स्थिति नीचे तालिका में दी गई है:

क्र. सं.	एम्स	अस्पताल की सुविधा				
		बिस्तरों की संख्या (960) में से	एमओटी की संख्या		कार्यात्मक सुपर स्पेशियलिटी की संख्या 17) में से	(कार्यात्मक स्पेशियलिटी की संख्या 18) में से
			स्वीकृत	कार्यात्मक		
1	भोपाल	574	24	11	13	18
2	भुवनेश्वर	792	25	1	16	18
3	जोधपुर	700	30	4	15	18
4	पटना	650	28	11	13	18
5	रायपुर	600	28	18	12	18
6	ऋषिकेश	880	25	15	17	18

छह एम्स में विविध सेवाओं का वर्षों से विस्तार किया गया है और वर्तमान में, औसतन 12000 से अधिक मरीज प्रतिदिन ओपीडी में आते हैं और इन छह एम्स में हर महीने लगभग 2600 प्रमुख सर्जरी की जाती हैं। इन छह एम्स में विगत वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं की वृद्धि नीचे दिए गए ग्राफ्स में दर्शाया गया है:

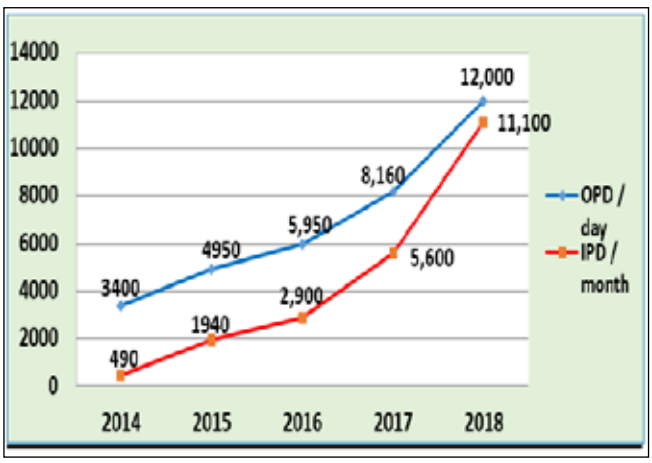

चित्र: 1 – छह एम्स– ओपीडी एवं आईपीडी जनगणना

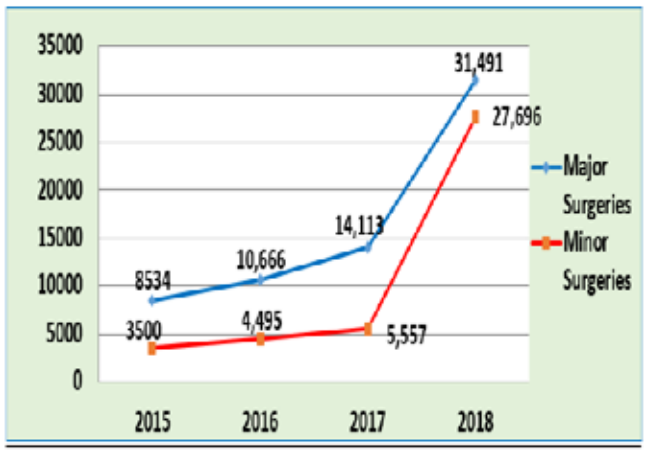

चित्र: 2 – छह एम्स–सर्जरी– मेजर एवं माइनर

चरण– II, IV, V, VI और VII:

इन चरणों के तहत, सोलह (16) अतिरिक्त एम्स की घोषणा की गई है, जिसमें से 15 एम्स को कैबिनेट द्वारा मंजूरी/अनुमोदन दे दिया गया है। उनकी वर्तमान प्रगति सहित विवरण नीचे दी गई तालिका में है:

चरण	एम्स	मंत्रिमंडल के अनुमोदन की तिथि	अनुमोदित लागत	अनुमोदित समय–सीमा	कार्य की स्थिति एवं प्रगति
चरण-II	एम्स रायबरेली (यूपी)	05.02.2009 संशोधित लागत अनुमान (आरसीएच) ईएफसी) द्वारा 22.06. 2017 को मंजूर किया गया	823 करोड़ रु	मार्च, 2020	• दिनांक 16.12.2018 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ओपीडी का उद्घाटन किया गया। • चिकित्सा कॉलेज/अस्पताल:29%
चरण-IV	एम्स मंगलागिरी (आंध्रप्रदेश)	07.10.2015	1618 करोड़ रु	60 महीने सितम्बर, 2020	• ओपीडी ब्लॉक एवं आवासीय परिसर 65% • अस्पताल एवं शैक्षिक परिसरः 22% • नया एमबीबीएस बैच (50 छात्र) अगस्त, 2018 में प्रारंभ • ओपीडी मार्च, 2019 में प्रारंभ हुई
	एम्स नागपुर (महाराष्ट्र)	07.10.2015	1577 करोड़ रु	60 महीने सितम्बर, 2020	• ओपीडी ब्लॉक एवं आवासीय परिसर 70% • अस्पताल एवं शैक्षिक परिसरः 24% • नया एमबीबीएस बैच (50 छात्र) अगस्त, 2018 में प्रारंभ • ओपीडी का कार्य जनवरी 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य था काम भी चल रहा है।
	एम्स, कल्याणी (पश्चिम बंगाल)	07.10.2015	1754 करोड़ रु	60 महीने सितम्बर, 2020	• ओपीडी ब्लॉक एवं आवासीय परिसरः 46.5% • अस्पताल एवं शैक्षिक परिसरः 21.5%
	एम्स, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)	20.07.2016	1011 करोड़ रु	45 महीने अप्रैल, 2020	• निर्माण ईपीसी मोड में चालू (27.10%). • ओपीडी सेवाएं फरवरी, 2019 में प्रारंभ हुई।
	एम्स, भटिंडा (पंजाब)	27.07.2016	925 करोड़ रु.	48 महीने जून, 2020	• निर्माण कार्य ईपीसी मोड प्रगति में पर है (18.78%).
	एम्स, गोवाहाटी (असम)	24.05.2017	1123 करोड़ रु.	48 महीने अप्रैल, 2021	• मास्टर योजना – संकल्पना डिज़ाइन को अंतिम रूप दिया गया। • राज्य सरकार द्वारा भूमि को भरने का कार्य प्रक्रिया में है • निविदा दिनांक 18.1.2019 को ईपीसी मोड के अंतर्गत दी गई सम्मानित किया गया है

	एम्स, बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)	03.01.2018	1351 करोड़ रु.	48 महीने दिसम्बर, 2021	• चारदीवारी का कार्य प्रगति पर है। • डिज़ाइन सलाहकार नियुक्त किया गया है। • मास्टर प्लान को अंतिम रूप दिया गया। • निविदा दिनांक 23.01.2019 को ईपीसी मोड के अंतर्गत दी गई।
	एम्स, मदुरैई (तमिलनाडु)	17.12.2018	1264 करोड़ रु.	45 महीने सितम्बर, 2022	• स्थल को अंतिम रूप दिया गया • निवेश पूर्व कार्य चल रहा है।
	एम्स, बिहार	—	1200 करोड़ रु. (Tentative)	—	राज्य सरकार ने अभी तक उपयुक्त भूमि की पहचान नहीं की है।
	एम्स, सांबा (जम्मू)	10.01.2019	1661 करोड़ रु.	48 महीने जनवरी, 2023	• निवेश–पूर्व कार्य चल रहा है। • डिज़ाइन सलाहकार नियुक्त किया।
	एम्स, अवंतीपुरा (कश्मीर)	10.01.2019	1828 करोड़ रु.	72 महीने जनवरी, 2025	• निवेश–पूर्व कार्य चल रहा है।
चरण-VI	एम्स, देवघर (झारखंड)	16.05.2018	1103 करोड़ रु.	45 महीने फरवरी, 2022	• निवेश–पूर्व कार्य चल रहा है। • मुख्य कार्य के लिए निष्पादक एजेंसी नियुक्त की गई। • डिज़ाइन सलाहकार नियुक्त किया • मास्टर प्लान को अंतिम रूप दिया गया।
	एम्स, राजकोट (गुजरात)	10.01.2019	1195 करोड़ रु.	45 महीने, अक्तूबर, 2022	• स्थल को अंतिम रूप दिया गया। • निवेश–पूर्व कार्य चल रहा है।
	एम्स, बीबीनगर (तेलंगाना)	17.12.2018	1028 करोड़ रु.	45 महीने सितम्बर, 2022	• स्थल को अंतिम रूप दिया गया और निवेश–पूर्व कार्य चल रहा है।
चरण-VII	एम्स, मनेठी (हरियाणा)	28.02.2019	1295 करोड़ रु.	48 महीने, फरवरी, 2023	• राज्य सरकार द्वारा विवाद मुक्त भूमि सौंपी जा रही है

सभी एम्स के बारे में आम नीतिगत निर्णय लेने और सभी एम्स में नीतियों में एकरूपता लाने, एम्स के प्रभावी शासन की सुविधा प्रदान करने के लिए एक केंद्रीय संस्थान निकाय का सृजन किया गया है और उसे सशक्त बनाया गया है।

डॉ. वीके पॉल की अध्यक्षता में एक विजिटिंग कमेटी का गठन किया गया है, जो प्रशिक्षण, हैंडहोल्डिंग और फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम्स के लिए अंतराल की पहचान करने और संस्थागत प्रणालियों की मदद करने और नए एम्स में "कल्चर ऑफ एक्सीलेंस" सृजित करने का प्रयास कर रही है।

सरकारी चिकित्सा कॉलेजों का उत्थान

उन्नयन कार्यक्रम में मोटे तौर पर सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक / ट्रामा केयर सेंटर आदि के निर्माण के माध्यम से तृतीयक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में सुधार परिकल्पित है और मौजूदा और साथ ही केंद्र और राज्य के शेयर आधार पर नई सुविधाओं के लिए चिकित्सा उपकरणों की खरीद भी

परिकल्पित है। 75 सरकारी मेडिकल कॉलेजों / संस्थानों (जीएमसीआई) के उन्नयन के कार्यक्रम में मोटे तौर पर (i) सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक्स / ट्रामा केयर सेंटर्स का निर्माण, (ii) मेडिकल उपकरणों की खरीद शामिल है।

चरण–I: 13 सरकारी मेडिकल कॉलेजों को पीएमएसएसवाई चरण–I के तहत उन्नयन के लिए लिया गया है, जिनमें से प्रत्येक का अनुमोदित परिव्यय 120 करोड़ रु. (केंद्रीय अंशदान– 100.00.00 करोड़ रु. और राज्य के अंशदान–20.00 करोड़ रु. जम्मू एवं श्रीनगर जीएमसी को छोड़कर) (जहां प्रति जीएमसी केंद्रीय शेयर 115.00 करोड़ रु.है) तथा शिवम तिरुपति के लिए केंद्रीय शेयर 650.00 करोड़ रु. था। इन सभी जीएमसी में उन्नयन कार्य पूरा हो चुका है।

चरण–II: पीएमएसएसवाई चरण–II के तहत उन्नयन के लिए छह सरकारी मेडिकल कॉलेजों को लिया गया, जिनमें से प्रत्येक का अनुमोदित परिव्यय रु. 150.00 करोड़ (केंद्रीय अंश– 125.00 करोड़ रु. और राज्य अंश– रु. 25. 00 करोड़)। पीजीआईएमएस रोहतक को छोड़कर सभी जीएमसी में उन्नयन कार्य पूरा हो चुका है।

चरण–III: केंद्र सरकार ने पीएमएसएसवाई चरण–III के तहत 39 सरकारी मेडिकल कॉलेजों के उन्नयन को 150. 00 करोड़ रु. (केन्द्रीय अंशदान – रु. 120.00 करोड़ और राज्य अंशदान– रु. 30,000 करोड़) के स्वीकृत परिव्यय से 07.11.2013 को अनुमोदित किया है, इन जीएमएस पर सिविल कार्य के लिए एचएससीसी / एचआईटीईएस / सीपीडब्ल्यूडी को कार्यकारी एजेंसी के रूप में चुना गया है। इन जीएमएस के लिए चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए एचआईटीईएस को प्रोक्योरमेंट सपोर्ट एजेंसी (पीएसए) के रूप में भी नियुक्त किया गया है। इन सभी जीएमएस में निर्माण कार्य 2016 और 2017 में शुरू किया गया था। 13 जीएमएस अर्थात विजयवाड़ा, जबलपुर, रीवा, लातूर, बेरहामपुर, पटियाला, हुबली, कोटा, बीकानेर, तंजावुर, तिरुनेलवेली, गोरखपुर और मेरठ में निर्माण कार्य वर्ष के दौरान पूरा किया गया है। शेष जीएमसी में, सिविल और खरीद कार्य प्रगति पर हैं।

चरण–IV: आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने पीएमएसएसवाई के चरण–IV के तहत 200.00 करोड़ प्रत्येक (केंद्रीय शेयर: रु. 120.00 करोड़; राज्य का हिस्सा: रु. 80.00 करोड़) रु. की लागत से 13 मौजूदा सरकारी मेडिकल कॉलेजों / संस्थानों (जीएमसीआई) के उन्नयन को मंजूरी दी है। इनमें से 12 जीएमसीआई के लिए कार्यकारी एजेंसियों को नियुक्त किया गया है। 12 जीएमसीआई के लिए डीपीआर को मंजूरी दी गई है। इनमें से 10 जीएमसी हेतु कार्य सुपुर्द कर दिया गया है और निर्माण कार्य प्रगति पर है।

चरण–V (क) और चरण V (ख): मंत्रालय ने पीएमएसएस वास के चरण–V (क) के तहत 200.00 करोड़ रु. की लागत से (स्वास्थ्य मंत्रालय का हिस्सा 120.00 करोड़ रु. और मानव संसाधन मंत्रालय का हिस्सा 80.00 करोड़ रु.) आईएमएस, बीएचयू के उन्नयन तथा 230.00 करोड़ रु. की लागत से (स्वास्थ्य मंत्रालय का हिस्सा 120 करोड़ रु. और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग का हिस्सा 110 करोड़ रु.) एससीटीआईएमएसटी, तिरुवनंतपुरम के उन्नयन को मंजूरी दी है। दोनों परियोजनाओं के लिए कार्य सुपुर्द कर दिया गया है तथा निर्माण कार्य प्रगति पर है।

उपर्युक्त के अलावा, इस मंत्रालय ने चरण–V(ख) के तहत 38. 58 करोड़ रुपये की लागत से आईएमएस, बीएचयू वाराणसी में एक क्षेत्रीय नेत्र विज्ञान संस्थान की स्थापना तथा 178 करोड़ रु. की लागत से (केन्द्रीय हिस्सा 106.8 करोड़ रु. और राज्य का हिस्सा 71.2 करोड़ रु.) आईजीआईएमएस, पटना के उन्नयन को मंजूरी दी है।

वित्तीय प्रगति

पीएमएसएसवाई योजना की अवशोषण क्षमता में पिछले 4 वर्षों में व्यय में 46% वर्ष–दर–वर्ष वृद्धि के साथ काफी सुधार हुआ है, जैसा कि निम्नलिखित ग्राफ में सामने आया है।

(रु. करोड़)

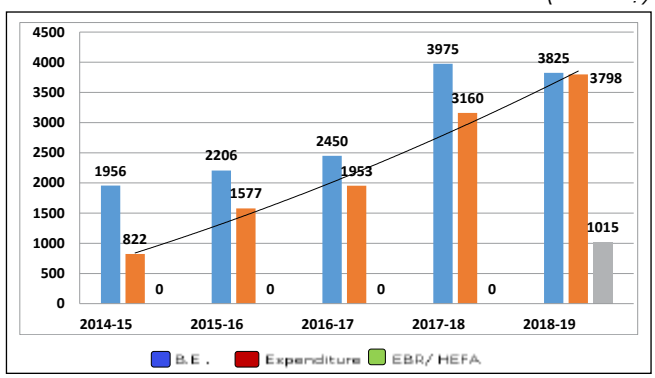

पीएमएसएसवाई के तहत बजट अनुमान/व्यय प्रवृत्ति

बजट उपयोग की स्थिति में भी पिछले 4 वर्षों में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है, जो पिछले वर्ष के दौरान 99.3% था।